आओ बनाएं अपना मध्यप्रदेश

दुनिया सुने विकास के तराने

भारतीय संस्कृति और संस्कारों में सबसे ऊपर है अपनापन और अपनत्व भाव। जैसे मन अपना, घर अपना, वैसा ही देश अपना, प्रदेश अपना। जरूरत है तो बस एक अहसास के साथ अपने प्रदेश को अपना समझने और समझाने की और अगर हम अपनी चीज पर अपना हक खोने लगे तो याद दिलाने में हर्ज ही क्या है? हक तो याद रहते हैं व्यक्ति को, भूलता तो वह दायित्व है। ये प्रदेश तो हमारा है ही तो दायित्व भी हमारे ही हैं। इतनी-सी बात अगर हर व्यक्ति की समझ में आ जाए तो मध्यप्रदेश को देश में नंबर एक प्रदेश बनने में देर नहीं लगेगी- यही बात समझाने की कोशिश है मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान की। यदि सरकार आपकी है तो आपसे उसका संवाद जरूरी है। ऐसी ही पावन मंशा से मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान अपने प्रदेश की उसी जनता से रूबरू होने, उनसे एक सहज संवाद कायम करने के उद्देश्य से एक प्यारभरा आह्वान करते हुए गणतंत्र दिवस के पावन प्रसंग पर 26 जनवरी से निकल रहे हैं- प्रदेश के गांव-गांव की उन गलियों, मोहल्लों, खेतों-खलिहानों से होते हुए, जो अपने हैं, यह कहते हुए कि आओ बनाएं अपना मध्यप्रदेश। इसी कड़ी में पहले मुख्यमंत्री ने अलग-अलग वर्ग के लोगों को अपने घर बुलाया-आओ और बताओ की तर्ज पर। अब वे गली-मोहल्लों, चौराहों, खेतों, खलिहानों में खुद जा रहे हैं। प्रदेश के हित में आप क्या सोचते हैं मिलिए और बताइए मुझे....? यात्रा की शुरुआत मुख्यमंत्री इसी 26 जनवरी से मध्यप्रदेश की जीवन रेखा पवित्र मां नर्मदा के उद्गम स्थल अमरकंटक से कर रहे हैं। वे ऐसी यात्रा हफ्ते में दो बार प्रदेश के दूरस्थ क्षेत्रों के भ्रमण के रूप में करेंगे। यात्रा का मूलमंत्र रहेगा आओ बनाएं अपना मध्यप्रदेश। यह यात्रा समर्पित रहेगी मध्यप्रदेश के उस समाज को, जो आम आदमी से बनता है। यह यात्रा उनके लिए है जिनका यह प्रदेश है। मुख्यमंत्री इस नए संकल्प को गणतंत्र दिवस से शुरू कर रहे हैं, यह हमें याद दिलाता है कि गणतंत्र का सही अर्थ आमजन को एक साथ जोड़कर ही बन सकता है एक तंत्र अर्थात एक सुव्यवस्था। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने इस अभियान को कुछ यूं देखा है जैसे वे कहना चाहते हैं- 'सेव नेशनल हार्ट'। हां, देश का दिल हमारे पास है हमारा प्रदेश। इसकी हार्टबीट कुछ ऐसी हो कि पूरे देश में विकास की धड़कन सुनाई दे। इस हार्ट की पंपिंग ऐसी हो कि विकास की धाराएं देश की रगों में हमसे होकर बहें। यह दिल गाए तो पूरा देश सुने।

क्या नहीं है हमारे पास मालवा की काली मिट्टीभरा पठार है तो तपते हुए निमाड़ की गरमाहट भी है। हम समृद्ध हैं, हम संपन्न हैं- आवश्यकता अपने प्रदेश की उर्वरकता, संपन्न, समृद्धता को पहचानने की है- यह पहचान करने के लिए चाहिए दृष्टिकोण में परिवर्तन, एक सकारात्मक सोच- मुख्यमंत्री आओ बनाएं अपना प्रदेश के आह्वान के साथ हमारी सोच, हमारी विचारधारा को सकारात्मक प्रवाह देने निकल रहे हैं। वे कहते हैं कि हमने विकास किया है, लेकिन उन्नति और प्रगति की बहुत-सी संभावनाएं अभी खुली हुई हैं। प्रदेश के हित में सब दल एक हो जाने की परंपरा, यह अभियान उसी परंपरा के निर्वाह से सफलता की दिशा में एक पहल है। आप जहां हैं सरकार वहां है- हम आपके पास हैं, आप अपनी जगह से ही प्रदेश के प्रति अपने-अपने कर्तव्यों को पूरा करें। सरकार और समाज एक साथ खड़े होंगे तो प्रदेश के नवनिर्माण के सपने स्वमेव ही साकार होने लगेंगे। अपनी स्वयं की कोई एक सांस्कृतिक पहचान कायम नहीं हो पाई और लोगों में मध्यप्रदेश का जज्बा नहीं बन पाया। राज्य की स्थापना के कुछ समय तक यह बात काफी हद तक सही भी रही, लेकिन अब ऐसा नहीं है। आज प्रदेश के विभिन्न अंचलों में रहने वाले लोग स्वयं को मध्यप्रदेश का वासी होने पर गर्व का अनुभव करते हैं और उसे विकास के लिए पूरी निष्ठा से काम भी कर रहे हैं। **-स्वाति तिवारी**

आप अपनी राय व पत्र ई-मेल भी कर सकते हैं -
editorial.bhopal@epatrika.com